[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3476

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारत में संगीत के बढ़ते हुए कदम

डॉ. नरेन्द्र कुमार ओझा
सहायक प्राध्यापक,
शासकीय महारानी, लक्ष्मीबाई, कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इन्दौर

भारत की सभ्यता और संस्कृति ऐतिहासिक है। भारत में संगीत विषयक ज्ञान कोई आज का नहीं है, यह बहुत पुराना है।

इतिहास में आज भी कई उच्च श्रेणी के कलाकार अपना स्थान बना चुके है जैसे– भास्कर बुवा, मियॉ जान, अब्दुल करीम खॉ, फैयाज खॉ, हैदर खॉ, वजीर खॉ, हफीज खॉ, ओंकारनाथ ठाकुर आदि। भारतीय कला के विकास में केन्द्र और राज्य सरकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, केन्द्रीय सरकार शिक्षा पात्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दे रही है। इस प्रकार से विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिल रहा है।

यह स्पष्ट करते हुए कि आजादी की लड़ाई में भारतीय संग्रीत का अपना विशिष्ट स्थान रहा है, संगीत ने ही भारतीय युवाओं में साहस एवं बहादुरी का पाठ सिखाया और यही कारण है कि हम ब्रिट्रिस साम्राज्यवादी व्यवस्था की जंजीरों से युक्त हो सकें। संगीत को सर्व साधारण में लोकप्रिय बनाने और उसका विस्तृत रूप से प्रचार एवं प्रसार करने में श्री विष्णु दिगम्बर पलुस्कर और श्री विष्णु नारायण भातखंडेजी ने प्रशंसनीय कार्य किया।

भारत की आजादी के बाद हमारी सरकार ने इस कला की उन्नति में जो सक्रिय भाग लिया, उसका प्रत्यक्ष उदाहरण अखिल भारतीय आकाशवाणी का संगीत–कार्यक्रम है। आकाशवाणी ने शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिए हर तरह से प्रयत्न किये और संगीत में विभिन्न प्रकार के प्रयोग किए हैं। आकाशवाणी के बाद दूरदर्शन विभिन्न चैनलों, इन्टरनेट आदि संचार साधनों ने समय और परिस्थितियों के बदलते हुए परिवेश तथा वैज्ञानिक संसाधनों के बढ़ते हुए कदम ने संगीत के क्षेत्र में भी तीव्र विकास हुआ है। सामान्य शिक्षा के साथ ही संगीत की शिक्षा पाना आसान हो गया है, पहले सब कुछ छोड़कर किसी गुरू के पास रहकर कठोर परिश्रम से संगीत कला आत्मसात् करनी पड़ती थी, अब वह कठिनाई नहीं रही है। शिक्षा का दृष्टिकोण बदलने से अब गुरू परम्परा समाप्त हो रही है उसका स्थान विद्यालयों एवं पाठ्य–पुस्तकों ने ले लिया है। परम्परागत समय में गुरू, शिष्य को सुबह उठाकर उससे स्वर–साधना करवाना था फिर एक–एक राग को पक्का करने में कई महीने लग जाते थे आज कुछ ही दिनों में संगीत स्कूलों में विद्यार्थी दस–बारह राग जान जाते है, यही दूरदर्शन, इन्टरनेट के कारण संभव हो सका है।

यह भी अत्यन्त ही प्रसन्नता की बात है कि फण्ड एवं राज्य सरकारें भारतीय कलाओं के पुनरूत्थान में स्वयं भाग लेने में आगे कदम बढ़ा रही है। केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकारे विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दे रही है। यह भी संगीत के प्रति विद्यार्थियों का लगाव दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है। क्योंकि पाठशालाओं में जाकर आसानी से संगीत का ज्ञान प्राप्त कर लेने फिर अच्छे कलाकारों से सम्पर्क करें, क्योंकि संगीत का प्राथमिक ज्ञान विद्यालयों से प्राप्त कर लिया जावे तो उस्तादो के सिर का बोझ बहुत कुछ हलका हो जायेगा। इस प्रकार से उस्तादों को संगीत के उच्च शिक्षा दान में बहुत ही सुविधा हो जावेगी। अगर संगीत के ज्ञान को बढ़ाना है तो संगीत के मंडलों को चाहिए कि अपने–अपने कोष एकत्रित करके एक–एक शिक्षण केन्द्र की स्थापना करें।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय आकाशवाणी के पास फैयाज खॉं, सिंहेश्वरी बाई,अंरतरी बाई जैसे कलाकारों का जो रिकार्डो का बड़ा संग्रह है, उसका लाभ विद्यार्थियो को मिल सके इसका संगीत को सर्व साधारण में लोकप्रिय बनाने और उसका विस्तृत रूप से प्रचार एवं प्रसार करने में विष्णु दिगंबर पलुस्कर और विष्णु नारायण भातखंडेजी ने प्रशंसनीय कार्य किया है। संगीत की उन्नति में जिन्होंने योगदान दिया उनमें, भारत के विश्वविद्यालय, संगीत–विद्यालय, संगीत–समाज, संगीत–महोत्सव सम्पन्न करने वाली संस्थाएँ, आकाशवाणी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, ये सभी संस्थाऐं जनता में संगीत का प्रचार कर रही है, जिससे जनता में इस कला के प्रति रूचि बढ़ती ही जा रही है। भारत की आजादी के पहले संगीत के क्षेत्र में बहुत ही कम उन्नति हुयी थी लेकिन आजादी के बाद इस क्षेत्र में बहुत कुछ उन्नति हुयी। संगीत विद्यालयों की स्थापना से ऐसे संगीत प्रेमियों की भी बहुत लाभ हुआ है, जो नियमित रूप से स्कूल या कॉलेज में जाकर या घर पर शिक्षक रखकर संगीत नहीं सीख सकते है। संगीत से केवल मनोरंजन की नहीं अपितु धर्म भी होता है। संगीत से अर्थ, धर्म,

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

काम और मोक्ष चारों पुरूषार्थो की प्राप्ति होती है, मानव जीवन में अर्थ का बहुत बड़ा महत्व है। जीवन के जितने व्यवहार होते हैं वे अर्थ के द्वारा ही संचालित होते है, अर्थ का संबंध जीवन से और जीवन का संबंध संगीत से है, जिस प्रकार अर्थ जीवन को चलाता है, उसी प्रकार संगीत भी जीवन को अनुप्राणित करता रहता है। यह भी सही है कि मानसिक तथा शारीरिक व्यथा से आक्रान्त होकर जब मनुष्य अति व्यस्त हो जाता है तो मन की उद्विग्नता को शान्त कर पुनः सशक्त बनाने की क्षमता एक मात्र संगीत में ही है। समाज को सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित बनाने में संगीत का विशेष हाथ रहता है। मनोगत भावों को सजीव एवं साकार रूप देकर उसे अत्यन्त आकर्षक और रंजक बनाने का एक मात्र कार्य संगीत का ही है। संगीत मानव हृदय और बुद्धि को संतुलित रखने में विशेष योगदान करता है। संगीत कला मानव को दानव बनने से रोकती है। मनुष्य की पाशविक प्रवृतियों को दूर करने में संगीत कला अत्यन्त ही सहायक सिद्ध होती है। जो व्यक्ति संगीत–कला से वंचित होते हैं, वे इस जगत में भार स्वरूप हैं वे मानव ही नहीं पशु हैं। संगीत मोक्ष का सर्वोत्कृष्ट साधन है। वह अन्तःकरण को पवित्र बनाकर अज्ञान के आवरण को भंग कर देता है और तब आत्मज्ञान की प्राप्ति होने से संगीत–साधक मुक्त हो जाता है । इस प्रकार संगीत मनुष्य के सर्वाङ्गीण जीवन को स्पर्श करता है।

संदर्भ –

1. *संगीत – निबंधावली : लक्ष्मीनारायण गर्ग*
2. *संगीत – निबन्धमालाः पं. जगदीश नारायण पाठक*
3. *संगीत – विशारद : वसन्त*
4. *भारतीय संगीत का इतिहास : रामप्रताप वीर*
5. *संगीत बोध : डॉ. शरदचंद, श्री धरपंराजवे।*